शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

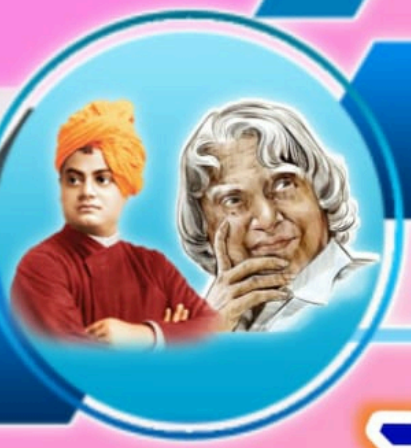

मिशन शिक्षण संवाद

काव्य मंजरी

शैक्षिक कविताओं का संग्रह

प्रकृति के अनमोल उपहार

संकलन :- मिशन शिक्षण संवाद, काव्य मंजरी टीम

आओ हाथ से हाथ मिलाएँ, बेसिक शिक्षा का मान बढाएँ

9458278429

मिशन शिक्षण संवाद

प्रकृति के अनमोल उपहार

काव्य मंजरी

01

रात

देखो कितनी अजब है बात,
दिन के बाद आती है रात।
पूरी रात सितारे चमकें,
चाँद गगन में हुआ तैनात।।

जब सूर्य क्षितिज के नीचे होता,
और देता है हमें विदाई।
दिवस की बेला हुई समाप्त,
काली अँधेरी रात है आयी।।

रात हमें लगती है प्यारी,
स्याह अँधेरी कारी-कारी।
इसका आना दे सन्देशा,
आ गयी अब सोने की बारी।।

दिन भर काम में थक जाते,
रात हुई तो हम सो जाते।
प्यारे सपनों में खो जाते,
दिन भर की थकान मिटाते।।

रचना
हेमलता गुप्ता (स०अ०)
प्रा० वि० मुकन्दपुर
लोधा, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद

प्रकृति के अनमोल उपहार

काव्य मंजरी

02

जल

जल ही जीवन का आधार,
मत करना इसको बेकार।
यह बहुमूल्य रत्न धरती का,
समझो मोल मानुष पानी का।।

जल की धारा बह-बहकर,
खुशियाँ खेतों में लाये।
वर्षा करते वे बादल,
रहे उमंगे बरसाये।।

प्यास बुझाता है सबकी,
जल से आने वाला कल।
बूँद-बूँद के संरक्षण की,
करनी है हम सबको पहल।।

मत गन्दा करना इसको,
जीवनदान ये है देता।
बंजर रेगिस्तान से पूछो,
मूल्य क्या जल का होता।।

रचना-
ज्योति विश्वकर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० जारी भाग- १
बड़ोखर खुर्द, बाँदा

मिशन शिक्षण संवाद

प्रकृति के अनमोल उपहार

काव्य मंजरी

03

दिन

भानू की प्रथम किरण खिली,
मन में आशा की लहर पली।
इक नया दिन फिर से आया है,
उसने फिर आशा को जगाया है।।

हर शाम की एक सुबह है,
हर दिन की एक रात है।
जो उम्मीद को जगाती है,
निराशा-आशा संग लाती है।।

दिन-दिन करके सप्ताह होता,
दिन-दिन करके युग बन जाता।
कोई दिन जन्मदिन का होता,
तो कोई मृत्यु-दिवस कहलाता।।

दिन तो यूँ ही आते-जाते हैं,
शिक्षा हमें यही दे जाते हैं।
स्थिर नहीं है कुछ इस जग में,
मन लगाओ प्रभु-उपासन में।।

प्रस्तुत
फहमीना मुईन (स०अ०)
प्रा० वि० नगला पटवारी
जवां, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद

प्रकृति के अनमोल उपहार

काव्य मंजरी

04

झरना- प्रिय निर्झर!

प्रस्तरों के बीच जो बहता सुनो क्या कहता?
निर्झर जब बहता, चलना जीवन है कहता।
नदी मन की मीत, सागर से भी प्रीत,
बाधाओं को पार कर चलना है जीत।।

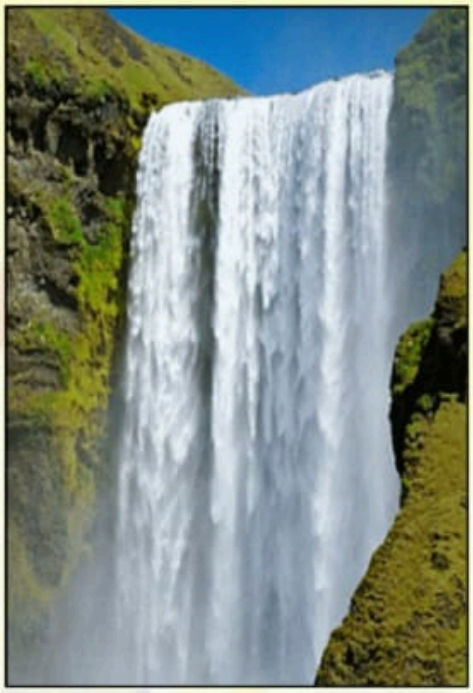

ऊँची पहाड़ियों से गिरकर हूँ मैं आता,
प्रताप, उत्स, निर्झर, भी मैं कहलाता।
मधुरतम गीत-संगीत तब मैं हूँ सुनाता,
जब-जब मेरे पथ में पाषाण है आता।।

इतनी दूर से जब मैं हूँ चलकर आता,
मन-मीत नदी से तब हूँ मिल पाता।
प्रेमी-प्रेयसी, परिवार जब घूमने आते,
देखकर मेरी छटा प्रफुल्लित हो जाते।।

शान्त स्वभाव से मैं सदा बहता रहता,
न करता शिकवा, न किसी से कहता।
सदा रहती है सागर मिलन की आस,
यही है प्रेम मिलन का प्रथम अहसास।।

प्रस्तुत
बृजेश सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० बीठना
लोधा, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद

प्रकृति के अनमोल उपहार

काव्य मंजरी

05

सूर्य का प्रकाश

सुबह सवेरे सूर्य का प्रकाश,
जब धरती पर आता है।
अन्धकार को दूर भगाकर,
धरती पर नया सवेरा लाता है।।

पेड़ों पर चिड़िया गीत गाती,
और हर कली खिल जाती है।
उत्साह और उमंग की किरण,
सबके मन में भर जाती है।।

सूर्य का प्रकाश हम सभी को,
एक बात सिखाता है।
जीवन को तुम बनाओ खास,
तभी जीवन में आनन्द आता है।।

स्वयं के लिए नहीं बल्कि,
दूसरों के जीवन में खुशियाँ लाओ।
सूर्य के प्रकाश की तरह बनकर,
सारे जहान में उजाला फैलाओ।।

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

मिशन शिक्षण संवाद

प्रकृति के अनमोल उपहार

काव्य मंजरी

फूल

06

तर्ज- फूल तुम्हें भेजा है ख़त में

फूल हैं हम, तुम हमें न तोड़ो,
डालों पर लगते प्यारे।
नीले, पीले, लाल, गुलाबी,
महकें बागों में सारे।।

गेंदा, जूही, और चमेली,
चम्पा की कलियाँ खिलतीं।
रात की रानी खुशबू बिखेरे,
हवा से डालें हैं हिलतीं।
खुशबू से भर जाये उपवन,
खिलखिलायें जब सारे।।

शीतल हवा, धूप में खेलें
काँटों में भी मुस्काते।
चाँदनी में चाँदी से चमकते
प्रातः ही हम खिल जाते।
सुन्दरता ऐसी है जैसे,
माँ के आँचल में सितारे।।

रचना-
पूनम गुप्ता "कलिका" (स०अ०)
प्रा० वि० धनीपुर,
धनीपुर, अलीगढ़, उ०प्र०

मिशन शिक्षण संवाद

प्रकृति के अनमोल उपहार

काव्य मंजरी

07

सूर्य ऊष्मा

धरा के माथे की बिन्दी,
सूर्य सा नहीं कोई प्रकाश।
प्राण सारे जग का सूर्य,
चमकाता सारा आकाश।।

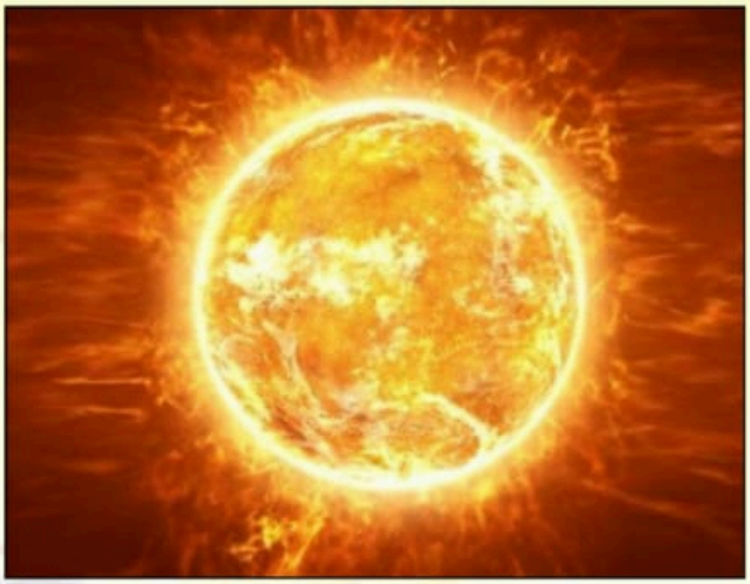

सूर्य आयु प्रभा बढ़ाता,
नित्य नवीन सा लगता है।
नारंगी, लाल चादर ओढ़,
संसार उजियारा करता है।।

सप्त रश्मियों पे सवार,
देवी ऊषा प्रकट होती हैं।
देवी ऊषा की ऊष्मा ही,
समृद्धि का कारण होती है।।

सबसे बड़ा चिकित्सक सूर्य,
ऊष्मा लो उसकी भरपूर।
प्राण ऊर्जा का स्रोत वही है,
छलकेगा तब जीवन में नूर।।

प्रतिभा भारद्वाज (स०अ०)
उ० प्रा० वि० वीरपुर छबीलगड़ी
जवां, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद

प्रकृति के अनमोल उपहार

काव्य मंजरी

ऑक्सीजन

तर्ज- बाबुल की दुआएँ लेती जा...

08

ऑक्सीजन पौधों से मिलती, अच्छा नहीं कम होना, कटना।
जीवों को भी जीवन देते, इनका संरक्षण है रखना।।

मन जब भी व्याकुल होवे तो,
ठण्डक तो हवा से मिलती है।
तन का तो पसीना ही सूखे,
मन खुश जब ड़ाली हिलती है।
प्रकृति की अनुपम भेंट है यह,
क्रत्रिम से दिन न कटे अपना।।..

गाँवों, शहरों में पेड़ लगें,
जब हवा चले तो खूब हिलें।
मानव उपयोगी ऑक्सीजन,
साँसों में भरकर सभी जी लें।
जीवों को भोज्य पदार्थ भी दे,
प्राणवायु बिन सबकुछ सपना।।..

रचना- नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
विकास खण्ड व जनपद- मथुरा

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

मिशन शिक्षण संवाद

प्रकृति के अनमोल उपहार

काव्य मंजरी

09

पृथ्वी

तर्ज़- दोहा

हरियाली से हरी-भरी,
पृथ्वी सबकी जान।
वृक्ष काट बंजर किया,
इंसान है नादान।।

सौरमण्डल का दिव्य ग्रह,
संसार में अनमोल।
उपकार करती अनगिनत,
ना इसका कोई मोल।।

नदियाँ कल-कल बह रहीं,
खेतों में छायी बहार।
धरती जीवनदायिनी,
दूर-तलक विस्तार।।

संरक्षित भू को करें,
ब्रह्माण्ड का उपहार।
नीले ग्रह के नाम से,
जाने यह संसार।।

रचना
मंजू शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० नगला जगराम
वि० क्षे०- सादाबाद
जनपद- हाथरस

प्रकृति के अनमोल उपहार

मौसम

10

आस-पास के वातावरण का,
हाल हमें बतलाता है मौसम।
सर्दी, गर्मी या रिमझिम बारिश,
ये समझाता है मौसम।।

छः प्रकार की ऋतुएँ होती,
मौसम की जो दशा बताती।
ग्रीष्म, वर्षा, ठण्डी शिशिर,
शरद, हेमन्त, बसन्त है भाती।।

बसन्त मौसम का राजा कहलाता,
वैशाख, चैत्र इसमें है आता।
जयेष्ठ, आषाढ़ गर्मी के मौसम,
मौसम अधिक गर्म हो जाता।।

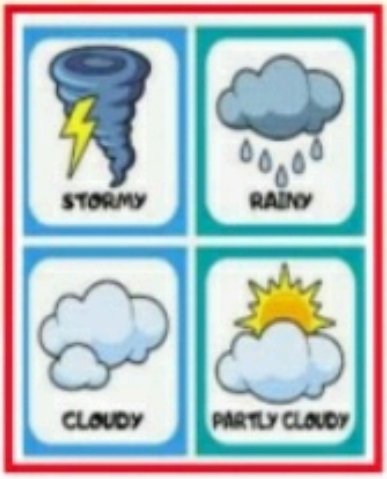

सावन भादों, वर्षा के मौसम,
रिमझिम बारिश लेकर आता।
गर्मी से मिलती थोड़ी राहत,
बच्चों को ये बहुत ही भाता।।

रचना -
डॉ० नीतू शुक्ला (प्र०अ०)
मॉडल प्राइमरी स्कूल बेथर 1
सिकन्दरपुर कर्ण, उन्नाव

प्रकृति के अनमोल उपहार

11

अग्नि

पंच तत्वों से बना हुआ,
है यह जीवन सारा।
पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि,
आकाश है जीवन आधारा।।

जीवन का मूल स्रोत है अग्नि,
बिन इसके कुछ नहीं होता।
अग्नि और ताप ना हो,
रहे सारा संसार सोता।।

रोग कई मिट जाते इससे,
तम भी दूर है होता।
यज्ञ, तप, हवनादि का फल,
सब इसमें ही होता।।

अग्नि तत्व का मित्र है वायु,
जल इसका शत्रु होता।
अग्नि वह तत्व है जिसमें,
हर विकार है जलता।।

रचना-
श्रीमती भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर(1-8)
क्षेत्र- परीक्षितगढ़, जनपद- मेरठ

मिशन शिक्षण संवाद

प्रकृति के अनमोल उपहार

काव्य मंजरी

12

चाँदनी

है रात चाँदनी स्याह दूधिया सी,
चाँद के साथ-साथ चलती है।
नीले आसमां के छाँव तले,
चाँद की चाँदनी भी निकलती है।।

असँख्य मणिकाएँ रात में चमक उठती,
ओस की बूँदों पर चाँदनी दमकती है।
रात में चाँद कहीं जो है छिप जाता,
पाने को उसे चाँदनी मचलती है।।

अपनी मासूम चमक चाँद से बाँटा करती,
चाँद की एक झलक से ही निखरती है।
शरद की रात में पूर्णिमा को अक्सर,
चाँद की चाँदनी फिर बिखरती है।।

ढूँढती फिरती है गगन में सितारों को,
पर उसकी रोशनी में वो कहाँ ठहरती है।
श्वेत वसना सी चाँद की रातों में वो अक्सर,
अपनी किरणों के संग-संग मचलती है।।

रचना-
सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा वि० खजनी (रुद्रपुर)
क्षेत्र- खजनी,जनपद- गोरखपुर

मिशन शिक्षण संवाद

प्रकृति के अनमोल उपहार

काव्य मंजरी

13

फल

फल की हम बात करें,
ये हर वृक्ष शोभित होते हैं।
फूल पेड़ों को अलंकृत करते,
वहीं फल भरपूर सेहत देते हैं।।

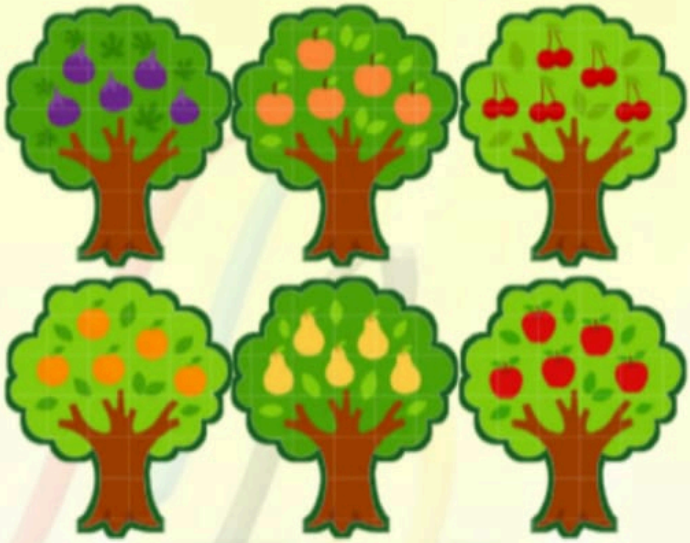

कुछ तो होते लम्बे, सुडौल,
और कुछ होते गोल-मटोल।
अलग-अलग किस्में और रंग,
सेवन इसका दे पौष्टिक तरंग।।

फल एकल एवं गुच्छे में लगते,
मौसम के अनुसार हैं मिलते।
सदाबहार फल प्रतिदिन आहार,
की गुणवत्ता को हैं और बढ़ाते।।

फल प्रकृति की सीख बतलाते,
फूलों के बाद ही पेड़ों पर आते।
जीवन चक्र भी है आना-जाना,
शरीर रोगमुक्त रखे यह खजाना।।

रचना
नीलम भास्कर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
बागपत, बागपत

मिशन शिक्षण संवाद

प्रकृति के अनमोल उपहार

काव्य मंजरी

बादल

14

बादल हैं काले-काले,
हवा से बातें करते हैं।
आसमान में छाये हैं,
गागर में सागर भरते हैं।।

सूरज-चन्दा को छिपाकर,
आँख-मिचौली करते हैं।
तपन से राहत देते हैं,
मन में शीतलता भरते हैं।।

धरती की प्यास बुझाते,
रिमझिम बरखा करते हैं।
पेड़-पौधे लहलहाते,
जल की बूँदें झरते हैं।।

पशु-पक्षी अमृत जल पाकर,
नयी उमंग भरते हैं।
अलबेले मौसम के संग में,
झूमकर नृत्य करते हैं।।

रचना- रीना काकरान (स०अ०)
प्रा० वि० सालेहनगर
जानी, मेरठ

मिशन शिक्षण संवाद

प्रकृति के अनमोल उपहार

काव्य मंजरी

15

पहाड़

पर्वत होते हैं बहुत विशाल,
होते हैं इनके पाँच प्रकार।
पर्वतों का मौसम ठण्ड़ा होता,
यहाँ पर हिमपात होता रहता।।

अनेकों नदियों का स्थान होता,
झीलों, प्रपातों का स्थल होता।
बादलों को रोककर वर्षा करता,
मलय पवन का बसेरा यहाँ होता।।

पर्वतों पर जीवन कठिन होता,
बहुत ही संघर्ष से भरा होता।
औषधियों का भण्डार यहाँ होता,
हरियाली का यह स्रोत होता।।

पर्वत देश की रक्षा करता,
बर्फीली हवाओं को रोकता।
प्रकृति का अमूल्य उपहार होता,
अनेकों गुणों से भरपूर होता।।

रचना- इला सिंह (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० पनेरूवा (1-8)
अमौली,फतेहपुर

मिशन शिक्षण संवाद

प्रकृति के अनमोल उपहार

काव्य मंजरी

16

नदियाँ

भूतल पर प्रवाहित जलधारा,
नदी नाम से जानी जाती है।
संस्कृत में नद्यः या सरिता,
नाम से भी पहचानी जाती है॥
सदानीरा व बरसाती,
दो प्रकार की नदियाँ होती हैं।
भारतीय सभ्यता में नदियाँ,
पौराणिक काल से पूजी जाती हैं॥

सबसे लम्बी नदी के रूप में,
गंगा नदी पहचानी जाती है।
नील नदी को विश्व की,
सबसे लम्बी नदी मानी जाती है॥
राजस्थान की अरवरी नदी को भारत में,
सबसे छोटी नदी की पहचान मिली।
विश्व की सबसे छोटी नदी रो नदी को,
गिनीज बुक में अपनी पहचान मिली॥

रचना:- शिप्रा सिंह (स०अ०)
उ० प्रा० वि० रूसिया
अमौली, फतेहपुर

प्रकृति के अनमोल उपहार

पेड़-पौधे

प्रकृति ने हम मनुष्यों को,
पेड़-पौधों का दिया उपहार।
अन्न देते, फल-सब्जी देते,
देते हमें जीवन में सुख अपार।।

पेड़ो से औषधि मिलती,
पेड़ो से लकड़ी मिलती।
पेड़ो के कारण वर्षा आती,
जड़े भूमि को कटने से बचाती।।

वातावरण को शुद्ध बनाते,
ऑक्सीजन हम पेड़ से पाते।
पृथ्वी पर अगर पेड़ न होते,
शुद्ध हवा हम कहाँ से पाते।।

चाहते हो अगर जीवन खुशहाल,
एक-एक पेड़ लगाओ हर साल।
अपने बच्चों को यह समझाना,
पेड़ो को कटने से है बचाना।।

रचना- शहनाज़ बानो (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय- भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

प्रकृति के अनमोल उपहार

18

सुगन्ध

पेड़ों से फल, फूल, लकड़ी,
मिलती हमको छाल है।
उनमें छुपी एक अजब सी खुशबू,
देखो कैसा कमाल है।।

सुन्दर फूलों की खुशबू से,
महका यह जग सारा है।
खुशबू, सुगन्ध या कहें सुवास,
रोग भी इनसे हारा है।।

तरह तरह की खुशबू से,
तेल इत्र सब बनते हैं।
खुशबूदार मसाले भी,
स्वादिष्ट भोजन में रमते हैं।।

जड़, तना और पत्ती सुगन्धित,
कुछ पौधों की होती है।
विशेष सुगन्ध से उस पौधे की,
पहचान हमको होती है।

रचना- आराधना सिंह (प्र०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय लोढ़वारा
क्षेत्र व जनपद- चित्रकूट

मिशन शिक्षण संवाद

प्रकृति के अनमोल उपहार

काव्य मंजरी

19

औषधियाँ

प्रकृति के दिये उपहार में,
कितनी अद्भुत हैं औषधियाँ।
रखती काया को स्वस्थ,
दूर करती हमारी व्याधियाँ।।

विभिन्न रूपों में हैं मिलती,
तरह-तरह की वनस्पतियाँ।
फल, फूल, तना, जड़ या,
फिर टहनियाँ या पत्तियाँ।।

रोम, मिस्र, ईरान या अमेरिका,
में भी प्रयोग होती जड़ी-बूटियाँ।
भारत मे भी प्रमुख प्रणालियाँ हैं,
आयुर्वेदिक और यूनानी औषधियाँ।।

जड़ी-बूटियाँ प्राकृतिक उत्पाद होने,
के कारण दुष्प्रभावों से मुक्त हैं।
ये तुलनात्मक रूप से सुरक्षित और,
स्थानीय रूप से उपलब्ध हैं।।

रचना
ज्योति सागर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना (1-8)
बागपत, बागपत

मिशन शिक्षण संवाद

प्रकृति के अनमोल उपहार

काव्य मंजरी

20

झील

चारों ओर स्थल से घिरा भाग,
गहरा गड्ढा जल भरा भाग।
स्थिर जल का होता स्रोत,
झील प्राकृतिक जलस्रोत।।

ऊँचे पर्वत पर मिलती झील,
पठार, मैदानों में भी झील।
खारे पानी की होती झील,
मीठे पानी की भी झील।।

हिमानी से निर्मित हो झील,
ज्वालामुखी से भी झील।
वायु द्वारा निर्मित हो झील,
भ्रंशन द्वारा भी बनती झील।।

विश्व की सबसे बड़ी खारे पानी की,
कैस्पियन सागर की है झील।
भारत में सबसे बड़ी खारे पानी की,
उड़ीसा राज्य की चिल्का झील।।

रचना
सुमन पाण्डेय (प्र०अ०)
प्रा० वि० टिकरी-मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

मिशन शिक्षण संवाद

प्रकृति के अनमोल उपहार

काव्य मंजरी

21

आकाश

बृहद हो तुम गगन,
विस्तृत हो तुम सघन।
तुमसे शक्ति की तरंग,
हे शून्य! सब तुममें मगन।।

शाश्वत है तेरा प्रभाव,
अनन्त है तेरा विस्तार।
समेटे असीम रहस्य स्वयं में,
थामा आकाशगंगा का भार।।

चाँद तारे चमकें,
गगन तेरी सरपरस्ती में।
भानु भी प्रकाशित होते हैं,
अम्बर तेरी बस्ती में।।

प्रेरणा देता तेरा साथ,
पथ प्रदर्शक सा तेरा एहसास।
बनना चाहूँ बुलन्द व्योम सा,
फलक पर पहुँचने का करुँ प्रयास।।

रचना

डॉ० भावना जैन (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय निबाड़ा,
बागपत,बागपत

मिशन शिक्षण संवाद

प्रकृति के अनमोल उपहार

काव्य मंजरी

22

बारिश

बारिश है प्रकृति का अनुपम वरदान,
कहीं बरसता पानी झमाझम झमाझम।
कही होती है काली घटा और सुरमई धूप,
बारिश के मौसम के भी अनोखे रूप।।

बारिश की बूँदे जब तपती,
धरा को तर कर जाती है।
सौंधी-सौंधी महक माटी की,
चहुँ ओर बिखर जाती है।।

नाचे मयूर सुन्दर पंख फैलाकर,
कूके कोयल मतवाली होकर।
महके चमन फूलो की ख़ुशबू पाकर,
मन खिल जाए बारिश में नहाकर।।

समाँ सलोना, मौसम मतवाला,
इन्द्रधनुष लगे मन को मोहने वाला।
बारिश करती है सभी कि खवाइश पूरी,
जनजीवन के लिए है बारिश बहुत जरुरी।।

रचना
रीना कुमारी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना (1-8)
बागपत, बागपत

मिशन शिक्षण संवाद

काव्य मंजरी

रचनाकारों की सूची

01- हेमलता गुप्ता, अलीगढ़
02- ज्योति विश्वकर्मा, बाँदा
03- फहमीना मुईन, अलीगढ़
04- बृजेश सिंह, अलीगढ़
05- मृदुला वर्मा, कानपुर देहात
06- पूनम गुप्ता, अलीगढ़
07- प्रतिभा भारद्वाज, अलीगढ़
08- नैमिष शर्मा, मथुरा
09- मन्जू शर्मा, हाथरस
10- डॉ० नीतू शुक्ला, उन्नाव
11- भावना शर्मा, मेरठ
12- सुषमा त्रिपाठी, गोरखपुर
13- नीलम भास्कर, बागपत
14- रीना काकरान, मेरठ
15- इला सिंह, फतेहपुर
16- शिप्रा सिंह, फतेहपुर
17- शहनाज़ बानो, चित्रकूट
18- आराधना सिंह, चित्रकूट
19- ज्योति सागर, बागपत
20- सुमन पाण्डेय, फतेहपुर
21- डॉ० भावना जैन, बागपत
22- रीना कुमारी, बागपत

तकनीकी सहयोग

1- नैमिष शर्मा, मथुरा

2- जितेन्द्र कुमार, बागपत

मार्गदर्शन- राजकुमार शर्मा, चित्रकूट

संकलन :- काव्य मंजरी टीम